हिंदी के प्रमुख ऐतिहासिक उपन्यासों के नारी–पात्र : एक आलोचनात्मक अध्ययन

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्‍यालय, रायपुर को
कला–संकाय के अंतर्गत हिंदी विषय में
पी–एच.डी. उपाधि हेतु
प्रस्तुत

शोध–प्रबंध की रूपरेखा

2016–17

शोध–निर्देशक
डॉ. उर्मिला शुक्ला
सहा. प्राध्यापक, हिंदी विभाग
शास. जे.योगानंदम छत्तीसगढ़ महाविद्यालय
रायपुर (छत्तीसगढ़)

सह–निर्देशक
डॉ. मधुलता बारा
सहा. प्राध्यापक
साहित्य एवं भाषा–अध्ययनशाला
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय
रायपुर (छत्तीसगढ़)

शोध–छात्रा
मल्लिका मिश्रा

शोध–केंद्र

साहित्य एवं भाषा–अध्ययनशाला
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्‍यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़)

अनुक्रमणिका

प्रस्तावित शोध–कार्य का शीर्षक

प्रस्तावना

1. पूर्व में किए गए शोध–कार्य का पुनरावलोकन
2. प्रस्तावित शोध–कार्य का उद्देश्य
3. प्रस्तावित शोध का महत्व
4. प्रस्तावित शोध–प्रविधि
5. विषय की व्याप्ति एवं सीमाएँ
6. प्रस्तावित शोध का अध्यायीकरण
7. प्रस्तावित शोध का संभावित परिणाम

परिशिष्ट

- आधार–ग्रंथ
- संदर्भ–ग्रंथ
- पत्र–पत्रिकाएँ
- वेबसाइट्स

शीर्षक : हिंदी के प्रमुख ऐतिहासिक उपन्यासों के नारी–पात्र : एक आलोचनात्मक अध्ययन

प्रस्तावना

हिंदी उपन्यासों में ऐतिहासिक उपन्यासों का महत्वपूर्ण योगदान है। बहुत से मायनों में ऐतिहासिक उपन्यास समाज के लिए अधिक महत्वपूर्ण होते हैं। कारण ऐतिहासिक घटनाओं का अपना एक लिखित इतिहास होता है। उसके साथ–ही–साथ उसमें कल्पना का भी समावेश होता है। इतिहास हमें तथ्य देता है और ऐतिहासिक उपन्यास उसमें कल्पना का रंग भर के उसे हृदयग्राही बनाते हैं, जिससे वह पाठकों के मन में आसानी से उतर जाता है।

साहित्य में नारी की भूमिका सदैव रही है। अतएव ऐतिहासिक उपन्यासों में भी नारी–पात्रों की महत्वपूर्ण उपस्थिति रही हैं, चाहे वह रानी लक्ष्मीबाई के रूप में हो या फिर दिव्या के रूप में। ऐतिहासिक उपन्यासों में नारी–पात्रों की उपस्थिति उल्लेखनीय है। इसीलिए सभी उपन्यासों में नारी–पात्रों की केंद्रीय भूमिका नज़र आती है, चाहे वह आचार्य चतुरसेन कृत 'वैशाली की नगर वधु' की आम्रपाली हो या वृंदावनलाल वर्मा की 'झाँसी की रानी' हो या फिर यशपाल की अमिता और दिव्या हो। इन ऐतिहासिक उपन्यासों में हर तरह की नारी–पात्रों का चित्रण किया गया है। इस शोध–कार्य में मेरा उद्देश्य ऐतिहासिक उपन्यासों के नारी–पात्रों के चरित्र के विविध रूपों का विश्लेषण करना है।

1. पूर्व में किए गए शोध–कार्य का पुनरावलोकन

किसी भी विषय पर शोध करने से पूर्व उस विषय से संबंधित साहित्यिक पुनरावलोकन अति आवश्यक होता है। इससे पृष्ठ–प्रेषण से बचा जा सकता है। अतः मैंने पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर के अंतर्गत ऐतिहासिक उपन्यासों पर किए गए कार्यों का अवलोकन किया और मैंने पाया कि ऐतिहासिक उपन्यासों में नारी–पात्रों पर अब तक समग्र रूप से कोई

शोध–कार्य नहीं किया गया है। अतः मैंने ऐतिहासिक उपन्यासों में चित्रित नारी–पात्रों को अपने शोध का आधार बनाया है।

2. प्रस्तावित शोध कार्य का उद्देश्य

ऐतिहासिक उपन्यासों में चित्रित नारी–पात्रों के द्वारा तत्कालीन समाज, राजनीति और इतिहास में नारी की भूमिका का अवलोकन और उसका आलोचनात्मक विश्लेषण करना मेरे इस शोध–कार्य का उद्देश्य है। मेरे इस कार्य के द्वारा ऐतिहासिक उपन्यासों में चित्रित नारी–पात्रों की भूमिका को एक अलग दृष्टिकोण से समझने का अवसर मिलेगा।

3. प्रस्तावित शोध का महत्व

ऐतिहासिक उपन्यासों का आधार इतिहास होता है। अतः उसके पात्र पाठकों के मन पर दीर्घकालिक असर करता है। ऐतिहासिक उपन्यासों में चित्रित नारी–पात्रों का वर्णन अन्य शोध–कार्यों में अवश्य किया गया होगा, किंतु मेरा मानना है कि जिस दृष्टिकोण से मेरे शोध–प्रबंध में उसका मूल्यांकन किया जाएगा वह अब तक किए गए शोध–कार्यों से अलग होगा और नारी–पात्रों की भूमिका को समझने में सहायक होगा।

4. प्रस्तावित शोध प्रविधि

प्रमुख ऐतिहासिक उपन्यासों एवं उससे संबंधित आधार–ग्रंथों, संदर्भ–ग्रंथों, पत्र–पत्रिकाओं, ब्लॉग्स, इंटरनेट का अध्ययन एवं संग्रहण कर उनका उपयोग इस शोध–कार्य को पूरा करने हेतु किया जावेगा। इस कार्य हेतु समय–समय पर पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर स्थित पं. सुंदरलाल शर्मा ग्रंथालय, शास. जे. योगानंदम महाविद्यालय स्थित ग्रंथालय, विवेकानंद ग्रंथालय एवं अन्य ग्रंथालयों में उपलब्ध सामग्रियों का अध्ययन किया जाएगा।

5. विषय की व्याप्ति एवं सीमाएँ

प्रस्तुत शोध–प्रबंध में मैंने वृंदावन लाल वर्मा, आचार्य चतुरसेन शास्त्री, हजारी प्रसाद द्विवेदी, यशपाल, रांगेय राघव, राहुल सांस्कृत्यायन, भगवतीचरण वर्मा के नारी प्रधान प्रमुख ऐतिहासिक उपन्यासों को स्थान दिया है। चूँकि उपरोक्त उपन्यासकारों द्वारा लिखे गए ऐतिहासिक उपन्यासों की संख्या विपुल मात्र में हैं अतः अपने शोध–प्रबंध में समस्त उपन्यासों को शामिल करना संभव नहीं है। अतएव मैंने उन्हीं उपन्यासों को शामिल किया है, जिनमें नारी–पात्रों की विशेष भूमिका है।

6. प्रस्तावित शोध का अध्यायीकरण

प्रस्तावना

- विषय–प्रवेश
- विषय की व्याप्ति एवं सीमाएँ
- पूर्व शोध–कार्य की समीक्षा
- प्रस्तावित शोध–कार्य का उद्देश्य
- प्रस्तावित शोध–कार्य का योगदान
- शोध का महत्व
- प्रस्तावित शोध–प्रविधि
- अध्यायीकरण

प्रथम अध्याय : हिंदी के प्रमुख ऐतिहासिक उपन्यास

1.1. ऐतिहासिक उपन्यासों का उद्भव

1.2. स्वतंत्रता पूर्व ऐतिहासिक उपन्यास

1.3. स्वातंत्र्योत्तर ऐतिहासिक उपन्यास

1.4. प्रमुख ऐतिहासिक उपन्यासकार एवं उनकी रचनाएँ

द्वितीय अध्याय : हिंदी के प्रमुख ऐतिहासिक उपन्यासों में इतिहास और कल्पना

2.1. ऐतिहासिक उपन्यासों में चित्रित घटनाएँ एवं पात्र

2.2. ऐतिहासिक उपन्यासों में चित्रित घटनाओं और पात्रों के कल्पना का सम्मिश्रण

तृतीय अध्याय : हिंदी के प्रमुख ऐतिहासिक उपन्यासों में चित्रित ऐतिहासिक परिवेश

2.1. सामाजिक परिवेश

2.2. राजनैतिक परिवेश

2.3. आर्थिक परिवेश

चतुर्थ अध्याय : हिंदी के प्रमुख ऐतिहासिक उपन्यासों में नारी–पात्रों की भूमिका

4.1. नारी–पात्र : पारिवारिक संदर्भ में

4.2. नारी–पात्र : सामाजिक संदर्भ में

4.3. नारी–पात्र : राजनैतिक संदर्भ में

4.4. नारी–पात्र : आर्थिक संदर्भ में

पंचम अध्याय : हिंदी के प्रमुख ऐतिहासिक उपन्यासों में चित्रित प्रमुख नारी–पात्र

5.1. रानी लक्ष्मीबाई

5.2. रानी दुर्गावती

5.3. मृगनयनी

5.4. दिव्या

5.5. अमिता

5.6. चौला

5.7. निपुणिका

5.8. चित्रलेखा

षष्ठ अध्याय : हिंदी के प्रमुख ऐतिहासिक उपन्यासों में चित्रित नारी–पात्रों के विविध रूप

6.1. ऐतिहासिक उपन्यासों में चित्रित सकारात्मक विचारों वाले नारी–पात्र

6.2. ऐतिहासिक उपन्यासों में चित्रित नकारात्मक विचारों वाले नारी–पात्र

6.3. ऐतिहासिक उपन्यासों में चित्रित मिश्रित विचारों वाले नारी–पात्र

सप्तम अध्याय : उपसंहार

परिशिष्ट

आधार–ग्रंथ

संदर्भ–ग्रंथ

पत्र–पत्रिकाएँ

वेबसाइट्स

शोधार्थी के प्रकाशित शोध–पत्रों का विवरण

7. प्रस्तावित शोध का संभावित परिणाम

हिंदी के प्रमुख ऐतिहासिक उपन्यासों में वर्णित नारी–पात्रों से अवगत होकर भी भारतीय समाज नारियों के महत्व को नहीं समझ पा रहा है। प्रस्तुत शोध समाज में नारी की भूमिका को समझने में सहायक सिद्ध होगा। तथा भविष्य में अन्य शोधार्थी भी प्रमुख ऐतिहासिक नारी–पात्रों तथा उनके द्वारा सामाजिक, राजनैतिक तथा आर्थिक क्षेत्रों में किए गए योगदानों से अवगत होंगे।

परिशिष्ट

आधार–ग्रंथ

द्विवेदी, हजारी प्रसाद. बाणभट्ट की आत्मकथा. दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, संस्करण 1971.

यशपाल. दिव्या. इलाहाबाद : लोकभारती प्रकाशन, संस्करण 1977.

वर्मा, भगवती चरण. चित्रलेखा. दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1934.

वर्मा, वृंदावन लाल. रानी दुर्गावती. झांसी : मयूर प्रकाशन, आठवाँ संस्करण, 1973.

वर्मा, वृंदावन लाल. मृगनयनी. दिल्ली : प्रभात प्रकाशन, संस्करण 2004.

वर्मा, वृंदावन लाल. झांसी की रानी. दिल्ली : प्रभात प्रकाशन, संशोधित संस्करण, 2011.

शास्त्री, आचार्य चतुरसेन. वैशाली की नगर वधु. मेरठ : हिंद पाकेट बुक्स, प्रथम संस्करण, 1948.

शास्त्री, आचार्य चतुर सेन. सोमनाथ. मेरठ : हिन्द पाकेट बुक्स, संस्करण 2013.

संदर्भ–ग्रंथ

अरूण, सरनाम सिंह शर्मा. हिंदी उपन्यासों का शास्त्रीय विवेचन. जयपुर : बोहरा प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1972.

कुमारी शैलबाला. हिन्दी उपन्यास का प्रारंभिक विकास. लखनऊ : सत्यसरन प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1973.

चमनलाल. यशपाल के उपन्यास. नई दिल्ली : प्रकाशन संस्थान, प्रथम संस्करण, 2002.

द्विवेदी, हजारी प्रसाद. हिंदी साहित्य : उद्भव और विकास. नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, दसवाँ संस्करण, 2013.

धवन, सुषमा. हिंदी उपन्यास, दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1961.

प्रसाद, सियाराम शरण. हिंदी उपान्यास का विकास और उसके चार पतिनिधि. दिल्ली : साहित्य प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1980.

प्रेम कुमार. हिंदी उपन्यास : अंतरंग पहचान. मथुरा : गिरनार प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1982.

भरतलाल. स्वातंत्र्योत्तर हिंदो उपन्यासों में व्यक्ति ओर समाज. लखनऊ : साहित्य शिल्पी प्रकाशन, 1987.

मधुर, रामनारायण सिंह. हिंदी के ऐतिहासिक उपन्यास. कानपुर : ग्रंथम प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1971.

मानधाने, धनराज. हिंदी के मनौवैज्ञानिक उपन्यास. कानपुर : ग्रंथम प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1971.

मिश्र, शिवकुमार. साहित्य इतिहास और संस्कृति. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2009.

मुदगल, शंकर बसंत. महाकाव्यात्मक उपन्यासों की शिल्पविधि. कानपुर : चंद्रलोक प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1994.

रानी, राजेश. हिंदी उपन्यासों में सामाजिक चेतना. दिल्ली : के.के. पब्लिकेशन, प्रथम संस्करण, 2009.

रामगोपाल. हिंदी उपन्यास का इतिहास. नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, तीसरा संस्करण, 2013.

वार्ष्णेय, लक्ष्मी सागर. हिंदी साहत्य का इतिहास. इलाहाबाद : लोकभारती प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2009.

वेंरकर, शोभा. साठोत्तरी हिंदी उपन्यासों का शिल्प विकास. दिल्ली : पीयूष प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2001.

शर्मा, आनंद. उपन्यासकार कमलेश्वर : समाजशास्त्रीय निष्कर्ष. दिल्ली : मेधा बुक्स प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2002.

शुक्ल, बैजनाथ प्रसाद. भगवानी चरण वर्मा के उपन्यासों में युगचेतना. दिल्ली : प्रेम प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1977.

सिन्हा, सुशीलकांत. हिंदी के प्रगतिवादी उपन्यास एक अध्ययन. इलाहाबाद : चित्रलेखा प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1976.

सिंह, श्री नारायण. बीसवों शताब्दी हिंदी उपन्यास : नए दो पहलू. दिल्ली : लोकवाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1976.

सिंह, जवाहर लाल. भगवती चरण वर्मा क उपन्यास और युग–चेतना. वाराणसी : कला प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2000.

सिंहल, शशिभूषण. हिंदी उपन्यास के पद–चिह्न. दिल्ली : आर्य प्रकाशन मंडल, प्रथम संस्करण, 2000.

सिंह, कुँवर पाल. मार्क्सवादी सौंदर्यशास्त्र और हिंदी उपन्यास. दिल्ली : नवचेतन प्रकाशन, 2005.

सिंह, नमिता. दिव्या : इतिहास और नारी विमर्श. दिल्ली : नवचेतन पकाशन, प्रथम संस्करण, 2005.

सिंह, योगेन्द्र प्रताप. हिन्दी साहित्य का इतिहास और उसकी समस्याएँ. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2011.

पत्र–पत्रिकाएँ

दैनिक–पत्र

अमृत संदेश, दैनिक, रायपुर.

जनसत्ता, दैनिक, नई दिल्ली.

दैनिक भास्कर, रायपुर.

देशबंधु, दैनिक, रायपुर.

नई दुनिया, दैनिक, रायपुर,

नवभारत, दैनिक, रायपुर.

पत्रिका, दैनिक, रायपुर.

हरिभूमि, दैनिक, रायपुर.

हिन्दुस्तान, दैनिक, नई दिल्ली.

पत्रिकाएँ

आजकल, मासिक, नई दिल्ली.

आलोचना, द्विमासिक, दिल्ली.

आउटलुक, मासिक, नई दिल्ली.

कथादेश, मासिक, नई दिल्ली.

नवनीत, मासिक, नई दिल्ली.

परिंदे, द्विमासिक, नई दिल्ली.

पहल, जबलपुर.

परिकथा, दिल्ली.

पाखी, मासिक, नोएडा.

पाण्डुलिपि, त्रैमासिक, रायपुर.

पुस्तक वार्ता, द्विमासिक, रायपुर.

बहुवचन, द्विमासिक, नई दिल्ली.

भाषा, द्विमासिक, नई दिल्ली.

लमही, लखनऊ.

समीक्षा, त्रैमासिक, नई दिल्ली.

शब्दार्थ, त्रैमासिक, वाराणसी.

शुक्रवार, मासिक, नई दिल्ली.

हंस, मासिक, नई दिल्ली.

वेबसाइट

hindiblog.com.

maoistresistance.blogspot.com.

naxaliterage.com.

naxalwar.wordpress.com.

sahityalochan.blogspot.com.

wikipedia.org/wiki/naxalite.

निर्देशिका	सह–निर्देशिका	शोधार्थी
डॉ0 उर्मिला शुक्ला	डॉ0 मधुलता बारा	मल्लिका मिश्रा
सहायक प्राध्यापक हिन्दी विभाग	सहायक प्राध्यापक साहित्य	
जे0 योगनदंम छत्तीसगढ़	एवं भाषा अध्ययन शाला	
महा0,रायपुर	पं. र.शं.शु. वि.वि., रायपुर (छ.ग.)	

शोध केन्द्र

साहित्य एवं भाषा–अध्ययनशाला

पं0 रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ0ग0)